आचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूंगरगढ़

दूरभाष नं. 01565–224600, 224900

ई–मेल :– jstsdgh01565@gmail.com

–अंकित सेठिया (मीडिया सह संयोजक)–

हर आत्मा में है परमात्मा बनने की शक्ति – युवाचार्य महाश्रमण

श्रीडूंगरगढ़, 28–1–2010 : तेरापंथ भवन के प्रज्ञा समवसरण में आध्यात्मिक प्रवचन करते हुये युवाचार्य श्री महाश्रमण ने कहा दुनिया में दो तत्त्व है चेतन और अचेतन। शरीर अचेतन है और आत्मा चेतन। प्रेक्षाध्यान का सूत्र है आत्मा से आत्मा को देखो। आचार्य महाप्रज्ञ ने सूत्र दिया रहो भीतर जीओ बाहर। आत्मा और शरीर भिन्न है साधक के सामने यह बात स्पष्ट रहनी चाहिये। जैन दर्शन आत्मतुला का सिद्धान्त देता है। सबको आत्म तुल्य समझो। इस सूत्र को अपनाने से अहिंसा को प्रतिष्ठित किया जा सकता है। जैन दर्शन हर आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति को स्वीकार करता है। वर्तमान् लोक के साथ भावी लोक को भी देखे। परम् चैतन्य को देखे। साधक का लक्ष्य मोक्ष होना चाहिये स्वर्ग या देवलोक की इच्छा न करे क्योंकि देवलोक के सुख भी विनाशशील होते हैं। जैन दर्शन के उपरोक्त सिद्धान्तों की तुलना श्रीमद् भागवद्गीता के साथ करते हुये युवाचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि तेरहवें अध्याय में श्री कृष्ण कहते हैं विनाशशील में जो अविनाशी है वह आत्मा है, परमात्मा है, चेतना है। उसको देखने का प्रयास करे। गीता में कहा गया है आत्मा को छेदा नहीं जा सकता, जलाया नहीं जा सकता, भिगोया नहीं जा सकता, सुखाया नहीं जा सकता। आत्मा शाश्वत है, स्थायी है, सनातन है, अचल है। आत्मा मरती नहीं है जैसे एक आदमी पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्र पहनता है वैसे ही आत्मा पुराना शरीर छोड़कर नया शरीर धारण कर लेती है। शरीर पर ध्यान दिया जाता है, किन्तु यह ध्यान रखना है कि शरीर विनाशशील है। उसके भीतर जो आत्मा है उसको देखना जरुरी है। उसकी अनुभूति करना कल्याण का मार्ग है। धर्मसभा में साध्वी परमयशा ने अपने दीक्षा दिवस पर आशीर्वाद मांगा। मुनि दिनेशकुमार ने स्वाध्याय के पांच प्रकारों की चर्चा की। 1. वाचना, 2. प्रच्छना, 3. परिवर्तना, 4. अनुप्रेक्षा, 5. धर्मकथा।

प्रकाशनार्थ :

अंकित सेठिया
सहसंयोजक